→ दक्षिणी पूर्वी पठारी प्रदेश :→

- → निर्माण → मिसोजोइक महाकल्प क्रिटेशियस युग
- → क्षेत्रफल → 6.89 %
- → जनसंख्या → 11 %
- → अवशेष → गोंडवाना भूमि
- → मिट्टी → काली
- → वनस्पति → सदाबहार / सागवान वन
- → वर्षा → 80-120 सेमी
- → ढाल → दक्षिण से उत्तर की तरफ
- → प्रमुख फसल → कपास, मसाला, अफीम, सोयाबीन, चावल
- → समुद्र तल से ऊँचाई - 500 मीटर

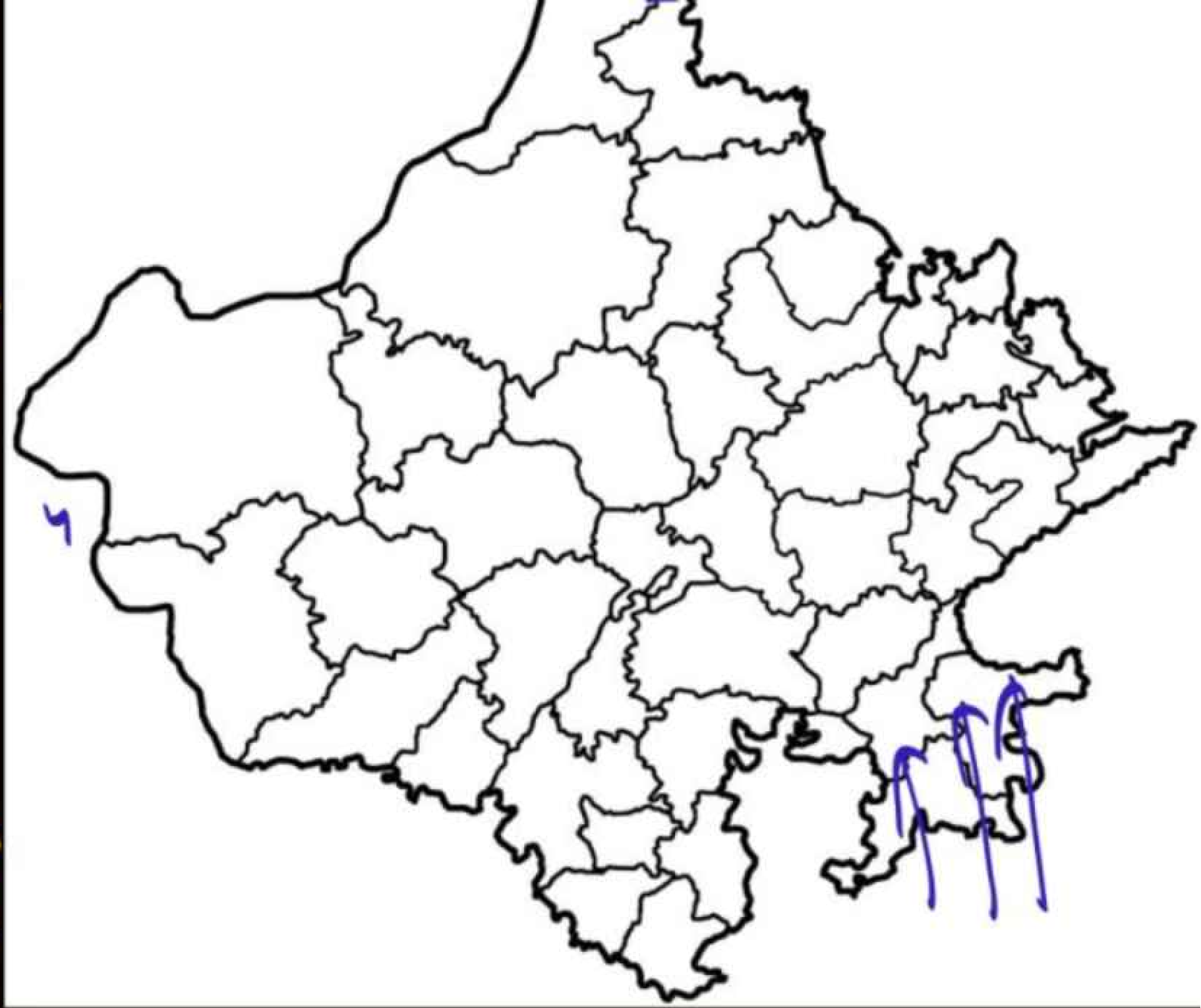

→ यह क्षेत्र मालवा के पठार का उत्तरी भाग/ उत्तर पश्चिमी भाग माना जाता है।

→ यह क्षेत्र ज्वालामुखी के दरारी उद्गार से निर्मित है।

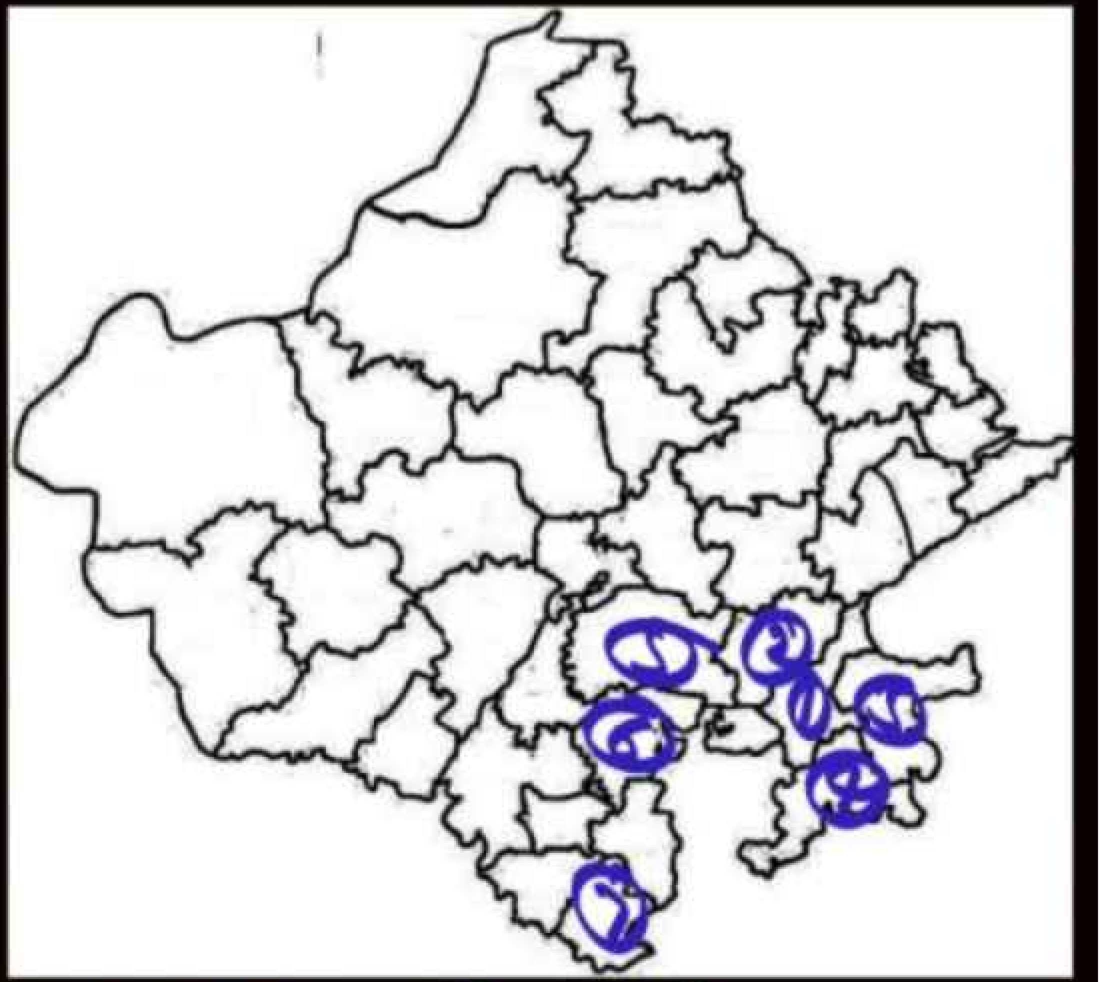

→ यह क्षेत्र अरावली व विंध्याचल पर्वत माला से घीरा हुआ है इस लिए इसे संक्रांति प्रदेश कहते है।

→ **विस्तार = 7 जिलो मे :→** कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बाँसवाड़ा

→ धरातलीय स्थिति के आधार पर दक्षिणी पूर्वी पठारी प्रदेश के दो भाग किये गये हैं।

2 भाग

1. दक्कन का लावा पठार
2. विंध्यन का निम्न कगारी भूमि वाला क्षेत्र

① दक्कन का लावा पठार :→

ये मालवा के पठार से मिला हुआ काली मिट्टी का उपजाऊ क्षेत्र है।

विस्तार → कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा।

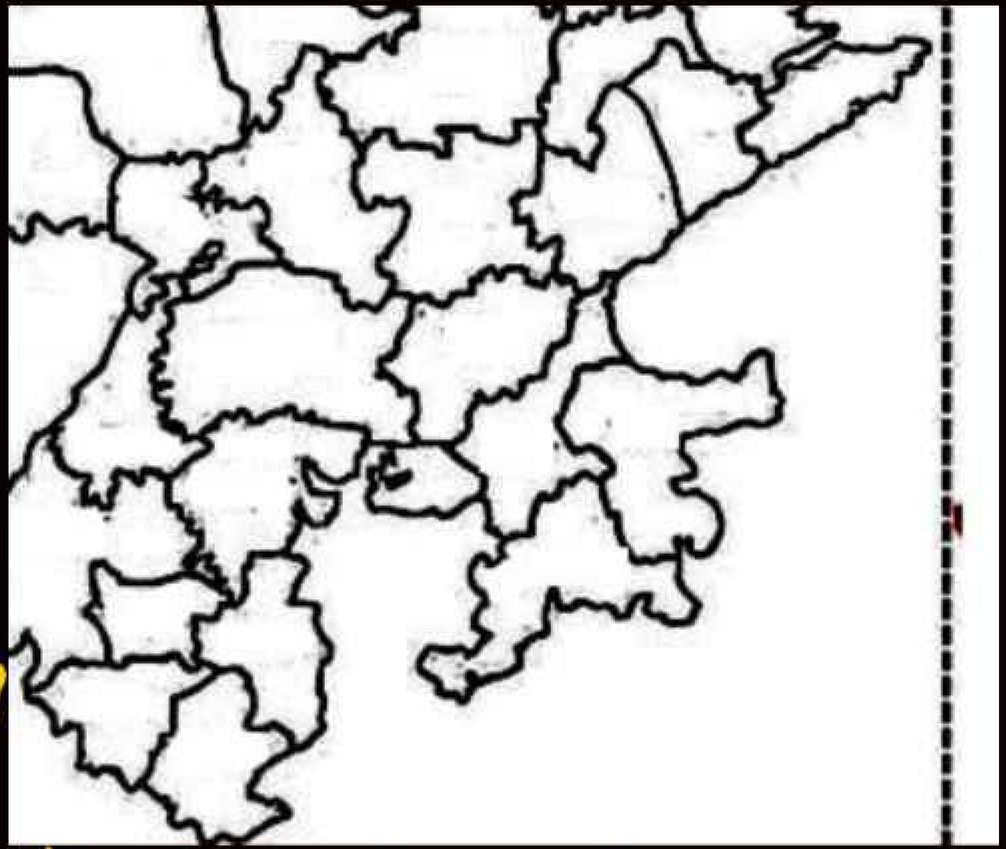

→ यह क्षेत्र मसाला उत्पादन हेतु अग्रणी माना जाता है। इस क्षेत्र का प्रमुख खनिज कोटा स्टोन है।

→ राज्य की सर्वाधिक वर्षा इसी क्षेत्र के झालावाड़ जिले में होती है।

② विंध्यन का निम्न कगारी भूमि वाला क्षेत्र

↳ इस क्षेत्र का निर्माण विंध्याचल पर्वत से नदियों द्वारा लाई गई जलोढ़ मिट्टी से हुआ।

विस्तार → सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर, बूंदी, बांसवाड़ा

→ इस क्षेत्र का प्रमुख खनिज बलुआ पत्थर है।

नोट :⇒ बांसवाड़ा व बूंदी जिला दक्कन के लावा पठार व विंध्यन के कगारी भूमि वाले दोनो क्षेत्रो का भाग है।

प्रमुख पठार :→

① उड़िया का पठार - सिरोही (राज्य का सबसे ऊँचा पठार)
↳ ऊँचाई - 1360 मीटर

② आबू का पठार :→ सिरोही (ऊँचाई - 1200 मीटर)

#③ भोराठ का पठार :→ कुंभलगढ़ (राजसमंद) से गोगुन्दा (उदयपुर) तक फैला पठारी क्षेत्र

#④ बिजासण पठार → मांडलगढ़ (भीलवाड़ा)

#⑤ उपर माल का पठार :→ बिजौलिया (भीलवाड़ा) से भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़)

⑥ काँकनवाड़ी का पठार :→ सरिस्का (अलवर) (काँकनवाड़ी दुर्ग)

⑦ मानदेसरा का पठार :→ भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़)

⑧ मेसा का पठार → चित्तौड़गढ़ (ऊँचाई - 620 मीटर)

⑨ भौमट का पठार :→ सिरोही, उदयपुर, डूंगरपुर मे फैला भील आबादी वाला पठारी क्षेत्र

⑩ लसाड़िया का पठार - जयसमंद झील (सलुम्बर) के उतर पूर्वी भाग मे फैला कटा फटा पठारी क्षेत्र।

(11) डग / गंगधार क्षेत्र :→

झालावाड़ का उत्तर पूर्वी भाग

→ नोट → कौलवी की गुफाओं के कारण डग को राजस्थान का एलोरा कहते हैं।

(12) बजादा :→ गिरी पद भाग का निम्न ढाल जिसमे मिट्टी का जमाव हो जाता है।

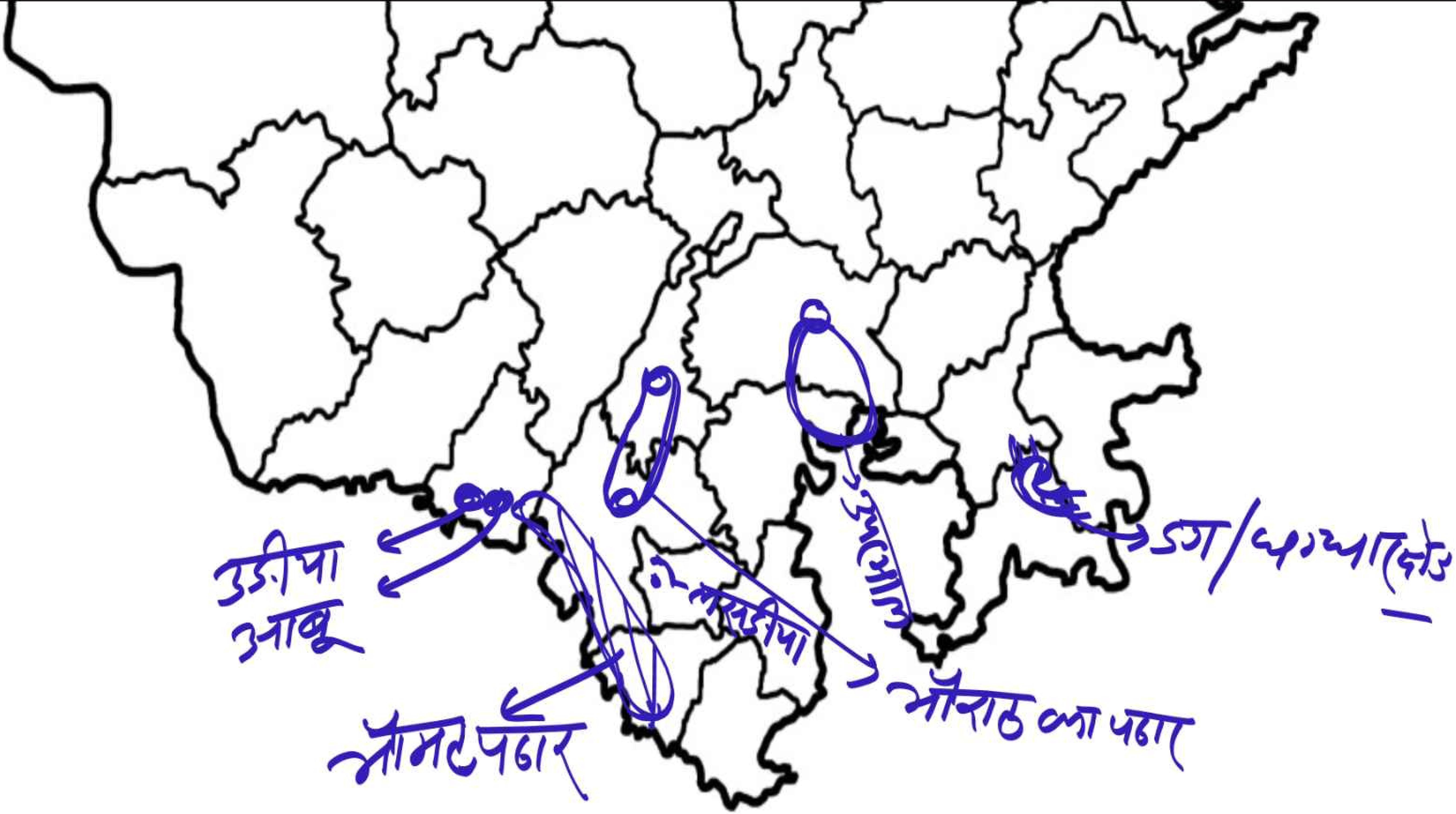
उड़ीया
आबू
भोमटपठार
भोराठ का पठार

→ दक्षिणी पूर्वी पठारी प्रदेश के प्रमुख दर्रे :→

→ जैताबास दर्रा, लाखेरी दर्रा, रामगढ़ दर्रा, खटगढ़ दर्रा → बूँदी

→ शाहबाद दर्रा, शाहबाद उच्च भूमि → बारां

अन्य पहाड़ियां

1. स्यानण की पहाड़ी → चुरू
2. उदयनाथ पहाड़ी, राजगढ़ी पहाड़ी - अलवर
3. बैराठ की पहाड़ी - कोटपूतली बहरोड़, जयपुर
4. बारखो की पहाड़ी → जयपुर
5. आडावल पर्वत → बूंदी
6. घोड़े की नाल की आकृति की पहाड़ी → बारां
7. गोलाकार पहाड़ी → बारां
8. सर्पाकार पहाड़ी → पाली

⑨ अर्द्धचन्द्राकार पहाड़ी → बूँदी

⑩ गुंबदाकार पहाड़ी → जालौर

→ पूर्वी मैदानी प्रदेश

निर्माण → टिथिस सागर/ निम्नोजोइक महाकल्प के प्लिस्टोसीन युग में।

क्षेत्रफल → 23%

जनसंख्या → 39% (सर्वाधिक जन घनत्व)

अवशेष → टेथिस सागर

मिट्टी → जलोढ़

वनस्पति → पतझड़ वन

वर्षा → 50-80 सेमी

फसल → गेहूँ, जौ, चावल, सरसों

जलवायु → आर्द्र

ढाल → पश्चिम से पूर्व की ओर

→ यह क्षेत्र गंगा यमुना के मैदान से मिला हुआ क्षेत्र है।

→ यह क्षेत्र राज्य का सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र है।

→ इस क्षेत्र मे राज्य की सर्वाधिक औद्योगिक इकाइयाँ है।

→ यह क्षेत्र नदियों द्वारा लाई गई जलोढ मिट्टी से निर्मित है।

विस्तार :→ 13 जिलो मे |

कोटपूतली बहरोड़, खैरथल तिजारा, डीग, भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, टोंक, जयपुर, दौसा, प्रतापगढ़, बाँसवाड़ा, अलवर

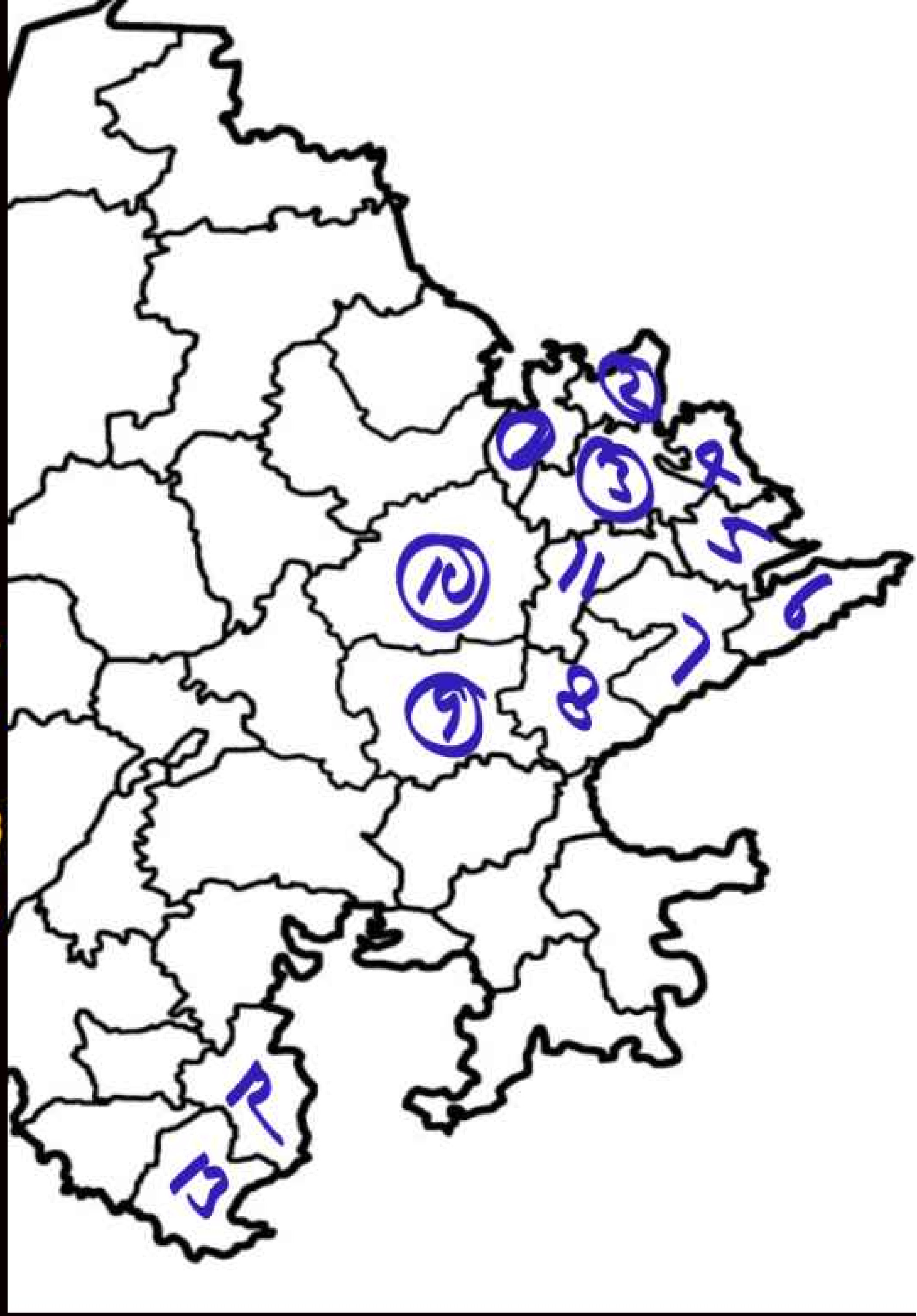

→ इस मैदान का निर्माण चार नदियों से हुआ व इसी के आधार पर नामकरण किया गया।

① **चंबल बेसिन** :→ सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर, बूंदी

② **बनास बेसिन** :→ टोंक, दक्षिणी जयपुर, सवाई माधोपुर

↳ बनास बेसिन में स्थित हिले उमा भाग को पिडमॉट का मैदान कहते हैं।

③ माही बेसिन :→

→ बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, सलूम्बर

④ बाणगंगा बेसिन :→

जयपुर, दौसा, भरतपुर, डीग, अलवर